



DR. DAMAYANTI BESHRA

Dr. Damayanti Beshra is a renowned Litterateur of Santali language. Presently, she is working as an Associate Professor of Odia in Maharaja Purnachandra Autonomous College, Baripada in the District of Mayurbhanj, Odisha. She is better known as an expert of Santali language because she has written various books to complete the entire teaching need of Santali language and literature. She has tremendously contributed to almost all the genre, beginning from Grammar, Linguistics, criticism, essay, poetry and short story. Her services have been utilized by Santal Community and Government Departments since the inclusion of Santali language in the Constitution in the year 2003.

2. Born on 16th February, 1962, Dr. Beshra completed Graduation from Ramadevi Women College, Bhubaneswar in the year 1981; Post Graduation and M. Phil from Utkal University, Vanivihar, Bhubaneswar in the year 1983 and 1993 respectively. Later she completed her Ph.D. in 2003 from North Orissa University, Baripada.

3. Dr. Beshra started her career as Junior Employment Officer, Sambalpur under Government of Odisha in 1985. In the same year, she qualified Staff Selection Commission and joined A.G., Orissa. It was a clerical job, but as the posting was in Bhubaneswar, she quit the officer job and joined there to get ample chance to prepare for Public Service Commission examination. She qualified Orissa Public Service Commission examination, joined as Lecturer and is continuing since 1987.

4. Dr. Beshra started writing from her school days. But, she hadn't got any chance to publish those in book form. So, when she established herself in a better post, she started publication from 1994 and till date she has published 8 books in Odia, 19 books in Santali and 7 translations. She acted as the first convener of Santali Language Advisory Board at Sahitya Akademi, New Delhi. She is the member of UPSC Syllabus Committee for Santali language, member Odia Bhasa Pratisthan and Advisor of All India Santali Writers' Association, Jhargram. Her works have been recognized by both Odia and Santali readers. Her 'Odia Bhasa Tatwo' is read as a reference book in Colleges and Universities of Odisha. Likewise her 'History of Santali Literature', Grammar, Linguistic and criticism books in Santali are read in almost all the universities and Colleges of Odisha, Jharkhand and West Bengal. She is very popular in the field of Santali literature. All the women intellectuals also like her very much because she had tried to unite them all through a women's magazine 'Karamdar'.

5. For her contribution to Odia and Santali literature, Dr. Beshra has received numerous awards and honours which includes Pandit Raghunath Murmu Fellowship-2004 from All India Santali Writers' Association, Jhargram, Prof. Khageswar Mahapatra Foundation Samman-2009, Sahitya Akademi Award-2010, Bhanja Putra Award by Pujyapuja-2010, Janajati Pratibha Samman from Government of Odisha-2012, Bani Ratna Upadhi, Banipitha, Badasahi-2015, Sahitya Sikhar Samman-2020 from Jagadish Prasad Yadav Smriti Pratisthan etc.





डॉ. दमयन्ती बेश्रा

डॉ. दमयंती बेश्रा संथाली भाषा की प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। वर्तमान में, वह ओडिशा के मयूरभंज जिले के बारीपदा में महाराजा पूर्णचंद्र स्वायत्त महाविद्यालय में उड़िया की एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उन्हें संथाली भाषा की विदुषी के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने संथाली भाषा और साहित्य की शिक्षण आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनेक पुस्तक लिखी हैं। उन्होंने व्याकरण से लेकर, भाषाविज्ञान, समालोचना, निबंध, कविता और लघु कहानी तक लगभग सभी विधाओं में असाधारण योगदान दिया है। वर्ष 2003 में संथाली भाषा को संविधान में शामिल किए जाने के बाद से संथाली समुदाय और सरकारी विभागों द्वारा उनकी सेवाओं का उपयोग किया गया है।

2. डॉ. बेश्रा का जन्म 16 फरवरी, 1962 को हुआ और उन्होंने वर्ष 1981 में रमादेवी महिला महाविद्यालय, भुवनेश्वर से स्नातक और 1983 और 1993 में उत्कल विश्वविद्यालय, वाणीविहार, भुवनेश्वर से क्रमशः स्नातकोत्तर और एम.फिल. किया। बाद में, उन्होंने 2003 में, उत्तर उड़ीसा विश्वविद्यालय, बारीपदा से पीएच.डी किया।

3. डॉ. बेश्रा ने 1985 में ओडिशा सरकार में कनिष्ठ रोजगार अधिकारी, संबलपुर के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। उसी वर्ष उन्होंने कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा में सफलता प्राप्त की और ए.जी., उड़ीसा में कार्यभार ग्रहण किया। यद्यपि यह एक लिपिकीय नौकरी थी, लेकिन चूंकि उनकी नियुक्ति भुवनेश्वर में हुई थी, इसलिए उन्होंने अधिकारी की नौकरी छोड़ दी और लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी करने के लिए वहाँ कार्यग्रहण कर लिया। उन्होंने उड़ीसा लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण की, व्याख्याता के पद पर कार्यग्रहण किया और वह 1987 से सेवारत हैं।

4. डॉ. बेश्रा ने अपने स्कूली दिनों से लिखना शुरू कर दिया था। लेकिन, उन्हें अपनी रचनाओं को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का मौका नहीं मिला। इसलिए, बेहतर पद प्राप्त होने पर, उन्होंने 1994 से अपनी रचनाओं को प्रकाशित करना शुरू किया और अब तक, उनकी उड़िया में 8 पुस्तकें, संथाली में 19 पुस्तकें और 7 अनूदित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वह साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की संथाली भाषा सलाहकार बोर्ड की पहली संयोजक थी। वह यूपीएससी की संथाली भाषा पाठ्यक्रम समिति की सदस्य, उड़िया भाषा प्रतिष्ठान की सदस्य तथा ऑल इंडिया संथाली राइटर्स एसोसिएशन, झाड़ग्राम की सलाहकार हैं। उड़िया और संथाली दोनों भाषाओं के पाठकों द्वारा उनकी रचनाओं की सराहना की जाती है। उनकी 'ओडिया भाषा तत्वो' पुस्तक ओडिशा के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संदर्भ पुस्तक के रूप में पढ़ी जाती है। इसी तरह, उनकी संथाली भाषा में 'संथाली साहित्य का इतिहास', व्याकरण, भाषा और समालोचना की पुस्तकें ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल के लगभग सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ी जाती हैं। वह संथाली साहित्य के क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हैं। सभी प्रबुद्ध महिलाएं उन्हें बहुत पसंद करती हैं, क्योंकि उन्होंने एक महिला पत्रिका 'करमदार' के माध्यम से उन्हें एकजुट करने की कोशिश की थी।

5. डॉ. बेश्रा को, उड़िया और संथाली साहित्य में योगदान के लिए, कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। जिनमें ऑल इंडिया संथाली राइटर्स एसोसिएशन, झाड़ग्राम की पंडित रघुनाथ मुर्मू फेलोशिप–2004, प्रो. खगेश्वर महापात्र फाउंडेशन सम्मान–2009, साहित्य अकादमी पुरस्कार–2010, पूज्यपूजा द्वारा भांजा पुत्र पुरस्कार–2010, ओडिशा सरकार का जनजाति प्रतिभा सम्मान–2012, बाणी रत्न उपाधि, बाणीपीठ, बादशाही–2015, जगदीश प्रसाद यादव स्मृति प्रतिष्ठान की ओर से साहित्य शिखर सम्मान–2020 आदि शामिल हैं।